International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493; Impact Factor: RJIF 5.46
Received: 19-09-2020; Accepted: 04-10-2020; Published: 20-10-2020
Volume 2; Issue 4; 2020; Page No. 17-19

छायावादी कवियों में राष्ट्रीय चेतना के स्वर

प्रिंस कुमार
छात्र, बी.एड.–एम.एड, साई नाथ विश्वविद्यालय, राँची, झारखंड, भारत

सारांश
भारतीय राजनीति की दृष्टि से देखें तो सन १९१८ ई० से १९३६ ई० का कालखंड आंदोलनों एवं जनभागीदारी का समय था । उस समय गाँधी, नेहरू, सरदार पटेल, सुभाषचंद्र बोस जैसे नेताओं का प्रभाव जनता पर बहुत था । स्वभाविक है यदि जनता पर स्वतंत्रता आंदोलन का प्रभाव है तो साहित्यकार भी उससे अछूते नहीं होंगे । परंतु साहित्य की दृष्टि से यह समय छायावादी रचनाओं का था जिसके बारे में यह कहा जाता है कि ये कवि वास्तविकता में कम और वायवीय संसार में अधिक विचरण करते हैं । इस शोध का उद्देश्य यही ज्ञात करना है कि क्या वास्तव में छायावादी कवि का सामाजिक जीवन एवं राजनीतिक आंदोलनोंध्हलचलों से कोई संबंध था अथवा नहीं।

मुख्य शब्दः राजनीति, भारतीय, नेहरू, सरदार पटेल, सुभाषचंद्र बोस

प्रस्तावना

द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता एवं स्थूलता के विद्रोह के प्रतिरूप में जिस काव्यधारा का विकास हुआ उसे छायावाद के नाम से जाना जाता है। इसका समय सन १९१८ ई० से १९३६ ई० तक का माना जाता है । इसके चार प्रमुख स्तंभ माने गए हैं : जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा । जबकि अन्य छायावादी कवियों में माखनलाल चतुर्वेदी, मुकुटधर पांडे आदि का नाम प्रमुखता से लिया जाता है ।

विषय प्रवेश

हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना या राष्ट्रीय जागरण की कविताएँ तो भारतेंदु युग से ही लिखी जाने लगी थी और द्विवेदी युग में इसका भरपूर विकास भी हुआ । परंतु क्या छायावादी कविताओं के आगमन के पश्चात राष्ट्रीय जागरण की कविताओं का लिखा जाना बंद हो गया था ? क्या छायावादी कवियों ने राष्ट्रीय जागरण की कविताएँ नहीं लिखी थी ? क्या छायावाद के समय साहित्य का संबंध राजनीति एवं समाज से टूट चुका था ? उत्तर है नहीं । किसी भी कालखंड में यह संभव नहीं है कि केवल एक ही प्रकार की कविताएँ लिखी जाए । हाँ, यह जरूर संभव है कि किसी प्रवृत्ति के प्रभाव से कुछ समय तक अन्य कविताओं का लिखा जाना कम हो जाए । तो आइए अब देखते हैं कि छायावाद के प्रमुख स्तंभों ने राष्ट्रीय जागरण में अपनी कविताओं के माध्यम से कितना योगदान दिया है :

जयशंकर प्रसादः प्रसाद जी छायावाद के सबसे प्रमुख एवं महत्वपूर्ण कवि हैं । कुछ विद्वान उनकी रचना 'झरना' (१९१८ ई०) से ही छायावाद का प्रारंभ स्वीकार करते हैं । प्रसाद जी को मुख्य रूप से प्रेम और धार्मिक भावना का कवि स्वीकार किया गया है परंतु अपनी रचनाओं की संकीर्णताओं पर आक्षेप का उन्होंने सदा ही विरोध किया है । प्रसाद जी का ऐतिहासिक ज्ञान किसी से छिपा हुआ नहीं है, अतः उनके साहित्य में देशभक्ति की भावना कम है यह कहना उनके साहित्य एवं देशभक्ति के प्रति अन्याय होगा । प्रसाद जी के लेखन काल में जब अंग्रेज भारतीयों को नीचा दिखाकर हीन भावना से ग्रस्त कर रहे थे उस समय प्रसाद जी भारतीयों को अतीत के गौरव का स्मरण कराते हुए लिखते हैं :

''हिमालय के आँगन में उसे, प्रथम किरणों का दे उपहार ।
ऊषा ने हँसकर अभिनंदन किया, और पहनाया हीरक हार ।।
जगे हम, लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक ।
व्योम–तम–पुंज हुआ तब नष्ट, अखिल संसृति हो उठी अशोक ।।''१

इसके पश्चात जब इतिहासकारों ने भारतीयों को आर्य,द्रविड़ में बाँटने का सिद्धांत प्रस्तुत किया कि भारतीय मध्य एशिया से आए थे और आर्य भारत के मूलनिवासी नहीं है तब कवि कहते हैं :

''किसी का हमने छीना नहीं, प्रकृति का रहा पालना यहीं ।
हमारी जन्मभूमि थी यहीं, कहीं से हम आये थे नहीं ।।''२

यह अलग विषय है कि प्रसाद जी की राष्ट्रीय भावना मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर, माखनलाल चतुर्वेदी से भिन्न है परंतु उनकी राष्ट्रीय भावनाओं में केवल राष्ट्रीयता न होकर प्रेम और प्रकृति का सौंदर्य भी है । कवि प्रकृति को आलंबन बनाकर देश की जनता को जागृत करते हुए कहते हैं :

''बीती विभावरी जाग री !
अम्बर पनघट में डुबो रही
तारा–घट ऊषा नागरी ।
खग–कुल कुल–कुल–सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा ।
लो, यह लतिका भी भर लायी
मधु मुकुल नवल रस–गागरी ।
अधरों में राग अमंद पिये,
अलकों में मलयज बंद किये,
तू अब तक सोयी है आली !
आँखों में भरे विहाग री !''३

उन्होंने न सिर्फ सोयी जनता को जागृत ही नहीं किया बल्कि जागृत जनता का पथ प्रदर्शन भी किया है ।वे जागृत जनता को स्वतंत्रता

समर में आगे बढ़ने एवं विजय श्री को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हुए कहते हैं :

''हिमाद्रि तुंग श्रृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती––
स्वयंप्रभा समुज्जवला
स्वतंत्रता पुकारती––
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़–प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पंथ है –– बढ़े चलो, बढ़े चलो
असंख्य कीर्ति–रश्मियाँ
विकीर्ण दिव्य दाह–सी ।
सपूत मातृभूमि के ––
रुको न शूर साहसी
अराति सैन्य सिंधु में –– सुबाड़वाग्नि–से जलो ।
प्रवीर हो जयी –– बनो बढ़े, चलो बढ़े चलो ।।''४

कवि बार–बार देशवासियों को जगाते हुए गौरवमय अतीत जिसमें हमने हूण, शक, कुषाण, मुगल सबको पराजित किया हैय का स्मरण कराते हैं । साथ ही देशवासियों को मातृभूमि के गौरव का स्मरण करवाते हुए वे कहते हैं कि हम वही आर्य संतान हैं जिन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया । अतः हमें भी अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र कराने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए तत्पर रहना चाहिए । क्योंकि व्यक्ति का अस्तित्व तभी तक सुरक्षित है जब तक उसका देश, जाति, साहित्य, अतीत आदि सुरक्षित हैय अन्यथा गुलामों का कोई अस्तित्व नहीं होता है । वे लिखते है :

''वही है रक्त, वही है देश, वही है साहस, वैसा ज्ञान ।
वही है शांति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य–संतान ।।''५

अतः छायावादी कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना के विकास एवं अतीत के गौरव गान की दृष्टि से प्रसाद जी का काव्य है अद्वितीय है ।

सूर्यकांत त्रिपाठी निरालाः निराला का काव्य संसार विविधताओं का संसार है । उन्होंने अनेक विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है और द्विवेदी युग की चली आ रही परंपरा से कविता को स्वतंत्र कराने का श्रेय भी उन्हें ही प्राप्त है । काव्य संग्रह में यदि प्रसाद की रचना झरना(१९१८ ई०) से छायावाद का प्रारंभ माना जाता है तो कविताओं में निराला से । उनकी पहली छायावादी कविता थी जूही की कली(१९१६ ई०) । लेकिन निराला सिर्फ छायावादी कविता तक ही सीमित नहीं थे । उनमें राष्ट्रीयता का स्वर भी कूट–कूट कर भरा हुआ था जो उनकी कविताओं में देखने को भी मिलता है । कवि पूज्य भारतभूमि की वंदना करते हुए लिखते हैं :

''भारति, जय विजय करे !
कनक–शस्य–कमलधरे !
लंका पदतल शतदल,
गर्जितोर्मि सागर–जल
धोता शुचि चरण युगल
स्तवन कर कर बहु–अर्थ–भरे !''६

कवि सदियों से सोए हुए भारतवासियों जिन्होंने स्वतंत्रता का मूल्य भुला दिया था उन्हें जगाते हुए कहते हैं :

''जागो फिर एक बार !
प्यारे जगाते हुए हारे सब तारें तुम्हें,
अरुण–पंख, तरुण–किरण
खड़ी खोलती है द्वार
जागो फिर एक बार ।''७

कवि निराला की कविता स्वतंत्रता आंदोलन के बढ़ने के साथ–साथ और भी तीव्र होती जाती है तथा कवि आंदोलनकारियों को स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए हिंसात्मक पद्धति को अपनाने का आह्वान करते हुए कहते हैं :

''सोचों तुम,
उठती है नग्न तलवार जब स्वतंत्रता की
कितने ही भावों से
याद दिलाकर दुःख दारुण परतंत्रता का
फूँकती स्वतंत्रता निज मंत्र से जब व्याकुल कान,
कौन वह सुमेरु रेणु–रेणु जो न हो जाय ।''८

कवि ने राम–रावण युद्ध को आधार बनाते हुए 'राम की शक्ति पूजा' नामक लंबी कविता लिखी है । इसमें वे आंदोलनकारियों को शक्ति संग्रह एवं सामूहिकता का पाठ पढ़ाते हुए विजय का विश्वास दिलाते है और लिखते है :

''होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन!
कह महाशक्ति राम के वंदन में हुई लीन ।''९

छायावाद के अन्य कवियों से निराला की राष्ट्रीय चेतना उग्र और क्रांतिकारी भावना से युक्त है । क्योंकि वे केवल की स्तुति ही नहीं करते हैं बल्कि राष्ट्र की समस्याओं को सुलझाने को लेकर लगातार प्रयत्नशील भी दिखते हैं । और सबसे बड़ी बात यह है कि वे केवल स्वतंत्रता का अमर गान ही प्रस्तुत नहीं करते हैं बल्कि स्वतंत्रता को बचाए रखने के प्रति सचेत करते हुए भी दिखलाई पड़ते है ।

सुमित्रानंदन पंत : कविवर पंत प्रकृति के सुकुमार कवि कह जाते हैं । उनके काव्य में प्रकृति का जितना सुंदर और मनोरम वर्णन है उतना शायद ही किसी हिंदी कवि की कविताओं में होगा । वह प्रकृति वर्णन, सौंदर्य चित्रण और दार्शनिक रहस्यों में अपनी काव्य की सार्थकता मानने वाले कवियों में से हैं । परंतु समय के साथ पंत की कविताओं में भी परिवर्तन आता है और वे प्रकृति के आलंबनों की चर्चा करते–करते स्वतंत्रता एवं राष्ट्र जागरण की कविताओं की ओर अग्रसर होते हैं । वे स्वतंत्रता के पुजारियों द्वारा पूजित भारतमाता के स्वरूप का वर्णन करते हुए लिखते हैं :

''गौरव भाल हिमालय उज्ज्वल
हृदय हार गंगा जल,
विंध्य श्रोणिवत, सिन्धुचरण नत
महिमा शतमुख गाता !''१०

राष्ट्रीय जागरण के इस अभियान एवं स्वतंत्रता आंदोलन में वे गाँधी के अहिंसात्मक विचारों से बहुत प्रभावित हैं जिसका प्रभाव उनकी कविताओं पर अंत तक बना रहता है । उनका मानना था कि अहिंसा एवं महात्मा जी के मार्गदर्शन में ही स्वतंत्रता मिल सकती है । उनमें इन विचारों का आना स्वाभाविक भी था अंततः पंत प्रकृति प्रेमी जो ठहरे । वे बापू के सम्मान में लिखते है :

''तुम माँस–हीन, तुम रक्त–हीन,
हे अस्थि–शेष ! तुम अस्थि–हीन,
तुम शुद्ध–बुद्ध आत्मा केवल,
हे चिर पुराण, हे चिर नवीन !
तुम पूर्ण ईकाई जीवन की,
जिसमें असार भव–शून्य लीनय
आधार अमर, होगी जिसपर
भावी की संस्कृति समासीन !''११

कवि का यह भी मानना था कि देश का विकास एवं किसी भी कार्य की सिद्धि तभी संभव है जब उस में प्रत्येक जन की भागीदारी सुनिश्चित हो । कवि गाँव के लड़कों, वृद्ध, महिलाओं एवं सभी वर्गों के लोगों का वर्णन अपनी कविताओं में करते हैं । कवि की दृष्टि में भारत माता ग्रामवासिनी है और ग्रामीण समाज भारतीय समाज का गौरव स्तंभ है, बिना ग्रामीण समाज को साथ लिए स्वतंत्रता प्राप्त करना संभव नहीं है । भारत माता के स्वतंत्रता का आह्वान करते हुए वे लिखते हैं :

''भारत माता
ग्राम वासिनी !
खेतों में फैला है श्यामल
धूल भरा मैला–सा आँचल
गंगा यमुना में आँसू जल
मिट्टी की प्रतिमा
उदासिनी !
दैन्य जड़ित अपलक नत चितवन
अधरों में चिर नीरव सेदन
युग–युग के तम से विषण्ण मन,
वह अपने घर में प्रवासिनी''१२

पंत स्वतंत्रता आंदोलनकारियों एवं सामान्य जनमानस के हृदय में अपनी कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीयता और जागरण का संदेश देते हुए सकारात्मक उर्जा के प्रवाह को लगातार बढ़ा रहे थे । कवि स्वतंत्र भारत का चित्र प्रस्तुत करते हुए एवं स्वतंत्रता आंदोलनकारियों को प्रेरित करते हुए लिखते हैं :

''मैं नव मानवता का संदेश सुनाता
स्वाधीन लोक की गौरव गाथा गाता
मैं मनः क्षितिज के पार मौन शाश्वत की
प्रज्ज्वलित भूमि का ज्योति वह वन आता ।
युग के खंडहर पर डाल सुनहरी छाया
मैं नव प्रभात के नभ में उठ मुसकाता
जीवन पतझड़ में जन मन की डालों पर
मैं नव मधु के ज्वाला पल्लव सुलगाता ।''१३

यद्यपि पंत के काव्य का मूल स्वर राष्ट्रवादी नहीं है तथापि उनकी कविता किसी भी राष्ट्रवादी कवि से कम भी नहीं है । उन्होंने अपनी कविता में युद्ध और ओजस्विता के प्रचलित मुहावरों से हटकर उपासना, प्रार्थना, अहिंसा, प्रेम, मानवता जैसी उदात्त भावनाओं को अभिव्यक्त किया है ।

महादेवी वर्मा: छायावादी कवियों में एकमात्र महिला स्तंभ है महादेवी वर्मा । महादेवी जी की कविताओं में स्थूल रूप से राष्ट्रीयता दिखाई तो नहीं देती है परंतु उनकी कविताओं को राष्ट्रीयता के तत्वों से रहित भी नहीं माना जाना चाहिए । क्योंकि महादेवी ने आध्यात्म जैसे सूक्ष्म तत्व का चित्रण अपनी कविताओं 'मैं नीर भरी दुख की बदली', 'फिर विकल है प्राण मेरे' आदि में किया है । अध्यात्म ही वह शक्ति है जिसने तमाम आक्रमणों के बाद भी हमारे अस्तित्व को बनाए एवं बचाए रखा है । अतः सूक्ष्म दृष्टि से हम महादेवी को राष्ट्रीय जागरण की कवियित्री कह सकते हैं ।

निष्कर्ष

इस प्रकार से हम देखते हैं कि छायावादी कवि केवल कल्पनालोक या स्वप्नलोक में ही नहीं विचरते हैं बल्कि वे समाज से ही स्पष्ट रूप से जुड़े हुए भी हैं जिसका प्रमाण है उनकी राष्ट्र जागरण से संबंधित कविताएँ । यह अलग विषय है कि इन कवियों की कविताओं का स्वर शेष राष्ट्रवादी कवियों से भिन्न है परंतु किसी भी दृष्टिकोण से उनसे कम नहीं है । डॉ० नगेंद्र लिखते हैं : ''छायावाद का दुर्भाग्य ही था कि उसे ठीक–ठाक सहृदयता से समझने का प्रयास नहीं किया गया । छायावाद मूलतः स्वानुभूति की कविता है । स्वानुभूति ही उसका उद्‌गम क्षेत्र है ।''१४ तथा यह स्वानुभूति सीधे–सीधे जनता के हृदय एवं तत्कालीन समाज से संबंध का जीवंत प्रमाण है जो स्वतंत्रता का अभिलाषी था ।

संदर्भ सूची

1. स्कंदगुप्त, जयशंकर प्रसाद, पृष्ट–१४१
2. वही
3. लहर, जयशंकर प्रसाद, पृष्ट–३३
4. चंद्रगुप्त, जयशंकर प्रसाद, पृष्ट–१६३
5. स्कंदगुप्त, जयशंकर प्रसाद, पृष्ट–१४१
6. राग–विराग, संपादक डॉ० रामकुमार वर्मा, पृष्ट–७६
7. वही, पृष्ट–५०
8. अपरा, निराला, पृष्ट–७०
9. राग–विराग, संपादक डॉ० रामकुमार वर्मा, पृष्ट–१०८
10. पंत ग्रंथावली, भाग–२, पृष्ट–३६
11. युगांत, पंत, पृष्ट–५३
12. पंत ग्रंथावली, भाग–२, पृष्ट–१४८
13. उत्तरा, विहग गीत, पंत
14. डॉ० नगेंद्र के आलोचना सिद्धांत, नारायण प्रसाद चौबे, पृष्ट–१७६